IJAER/January-February-2025/Volume-14/Issue-1 ISSN: 2278-9677
International Journal of Arts & Education Research
(Peer-Reviewed, Open Access, Fully Refereed International Journal) Impact Factor:7.06

राजस्थान का लोकसंगीत (लोकगीत व गायन शैलियां)

पुष्पा
(सहायक आचार्य संगीत कंठ)
चौ. बल्लूराम गोदारा राजकीय कन्या महाविद्यालय,
श्रीगंगानगर (राज0)

शोध–आलेख सार

राजस्थान में लोकगीतों का बहुत प्रचार है। यहाँ के जीवन में लोकसंगीत व्याप्त है। लोकनृत्यों में भी राजस्थान की माटी की सुगंध है, इसमें राजस्थानी जीवन की महक है। आज प्रचार–प्रसार के माध्यमो ं तथा चित्रपट संगीत के अभाव से लोकसंगीत का वह रुप नही रहा। आज लोकगीत भी फिल्मी धुनों में गाए जाने लग` है। फिर भी लोकसंगीत की सोंधी समाप्त नहीं हुई है। आदि काल से मनुष्य के आनंद की सार्वभौमिक भाषा संगीत रही है। लोक संगीत में व्यक्तिगत अथवा सामुहिक रुप से, लोकजीवन के विविध सुख–दुःख, संयोग–वियोग–आवेग, आनंद आदि अनुभूतियो ं व परम्परा, त्यौहार, उत्सव, संस्कार आदि अवसरों पर की जाने वाली सुरमयी अभिव्यक्ति लोक–संगीत है। लोक संगीत में किसी नियमित परीक्षण तथा शास्त्रीय अध्ययन की विषेष आवष्यकता नहीं होती है। लोकसंगीत राज्य के परम्परा सें विषेष सम्बन्ध रखता है। वहाँ के तीज–त्यौहार, घरों मे ं मनाये जाने वाले विषेष उत्सव आदि मे लोक संगीत का महत्त्व है। राजस्थान की भूमि पर जन्म लेने वाल` वीरों की गाथाएँ भी लोक संगीत से जुड़ी है।

मुख्य–षब्दः लोक–संगीत, राजस्थानी, वाद्य, लोकजीवन, संगीत, सुख–दुःख, गीत

लोक

लोक शब्द संस्कृत के लोकृ दर्षने धातु से ”धअ्”प्रत्यय करने से निष्पन्न हुआ है। इस धातु का अर्थ ”देखना“ होता है जिसका लट् लकार में अन्य पुरूष एकवचन का रूप ”लोकते“ है। अतः लोकशब्द का अर्थ हुआ ”देखने वाला“। अतः वह समस्त जनसमुदाय जो इस कार्य को करता है, ”लोक“ कहलाएगा। लोक शब्द अत्यन्त प्राचीन है। साधारण जनता के अर्थ में इसका प्रयोग ऋग्वेद में अनेक स्थान पर किया गया है। ऋग्वेद में लोक शब्द के लिये ”जन“ शब्द का भी प्रयोग होता है। **1**

मानव संगीत –प्रिय प्राणी हैं। स्वर लहरियों के साथ निकले हुए हृदयोदगार उसके मानस को विशेष प्रभावित करते है। सृष्टि के आरम्भिक काल से ही मनुष्य ने अपने उल्लास के अलावा दुःख के अवसरो पर भी भावों का उद्वेग संगीत के माध्यम से प्रकट किया है। जब राग–रागनियो, ताल स्वरों का बोध भी नहीं हुआ था तब भी आदिम जाति के लोग अपने उल्लास और विषाद को प्रकट करने के लिए अनेक प्रकार की ध्वनियाँ करते थे, यही ध्वनियां धीरे–धीरे ताल स्वर में बंधती चली गयीं। मनुष्य मे ज्ञान–वृद्धि के साथ–साथ निरर्थक शब्द हट कर भावयुक्त शब्दों का प्रयोग देखने को मिलता है। ” निरर्थक शब्द धुनों को बनाए रखने में सहायक होते है। “ ”किट–किट–धन“–तुड़त–तुड़त–तुत तु“ ओ ओ ऽ ऽ ऽ हो ऽ ऽ ऽ ऽ ” आदि निरर्थक शब्द ध्वनियां है। इनका प्रयोग आज भी होता चला आ रहा है।” **2**

लोकगीत

जब कभी भी मानव ह्रदय स्वयं की अनुभूति से प्रेरित होकर सुख या दुःख की संवेदनाओं से आंदोलित हुआ होगा, गीतों के अज्ञात स्वर मनुष्य के अधरों पर गुँज उठे होंगें। मनुष्य के ह्रदय में चाहे वह सभ्य हो या असभ्य, पढा–लिखा हो या अनपढ़ स्वयं की ही भावनाओं को प्रकट करने की इच्छा और क्षमता अवष्य रहती है। वह उनके उद्‌भव को उद्‌गीत करने की चेष्ठा करता है।इस प्रयास से उसकी रागात्मक प्रवृति लयपूर्ण होकर गीत का स्वरूप धारण कर लेती है।

इस तथ्य की पुष्टि के लिए हिन्दी साहित्य की **सुप्रसिद्ध कवियत्री स्व0 महादेवी वर्मा** द्वारा दी गयी गीत की परिभाषा का सहज ही स्मरण हो आता है। आपने लिखा हैः

"सुख–दुःख की भावावेषमयी अवस्था विषेष का गिने चुने शब्दों में

स्वर साधना के उपयुक्त चित्रण कर देना ही गीत हैं "3

लोकगीत का महत्व एवं उपयोगिता

अनादिकाल से ही मनुष्य के साथ सुख –दुःख आदि की बाते चली आ रही है। सुख की क्षणों में मस्ती के गीत गाकर आनन्द में समय व्यतीत किया है। अतः कहना पड़ता है कि लोकगीत मानव को फिर से नया जीवन देते है। विवाह,त्यौहार, पुत्र जन्म पर हर्ष का भाव हो तो बहिन और बेटी की बिदायी पर ये लौकिक दुःख की तीव्रता को सहने की शक्ति देते है। कही कहीं तो मृत्यु पर भी लोंकगीत या भजन गाकर विषाद की पीड़ा को हल्का किया जाता है।

लोकगीतों का वर्गीकरण

विभिन्न विद्वानों ने लोकगीतों के वर्गीकरण विभिन्न दृष्टिकोणों से किये है। लोकगीत विविध विषयों, अवसरों और शैलियों से युक्त है, जिनके वर्गीकरण भिन्न–भिन्न प्रकार से किये है। किसी ने प्रमुख शैलियों के आधार पर तो किसी ने विषयानुरूप। डॉ. सत्येन्द्र ने समस्त गीतों को अनुष्ठान संबधी और मनोरंजन सम्बन्धी दो भागों में बाँट कर फिर गाने के अवसरों के अनुसार उनका विभाजन किया है।**4** डॉ. श्याम परमार ने मुक्तक और प्रबंध दो श्रेणियों में गीतों को बाँट कर फिर छः प्रकार बताए है।**5**

विषेषताओं की व्याख्या

ऐतिहातिक दृष्टिकोण से, लोकसंगीत की निम्न विषेषताएं थी :–

मौखिक परम्परा :– लोकसंगीत को मौखिक परम्परा के माध्यम से संचालित किया जाता था। बीसवीं सदीं से पहले खेत में काम करने वाले आम मजदूर और कारखानों के कर्मचारी अनपढ़ थें। वे गानों को याद करके उन्हें अपनाते थें। जाहिर है कि इससे किताबों रिकॉर्ड गीतों या प्रसारण मीडिया की कोई भूमिका नही थी ।

पारम्परिक संगीत :–लोकसंगीत राज्य के परम्परा सें विषेष सम्बन्ध रखता है। वहाँ के तीज–त्यौहार, घरों मे ं मनाये जाने वाले विषेष उत्सव आदि मे लोक संगीत का महत्त्व है। राजस्थान की भूमि पर जन्म लेने वाले वीरों की गाथाएँ भी लोक संगीत से जुड़ी है।

गीतों का कॉपीराइट ना होना :– उन्नीसवीं सदीं के ऐसे सैकड़ो गीत है जिनके लेखक ज्ञात है। 1970 के बाद से ऐसा लगातार कम होता गया है। आज रिकोर्ड किये जाने वाले लगभग हर लोकगीत के लिए एक व्यवस्था को श्रेय दिया जाता है।

संस्कृतियों का मिश्रण :– एक विषेष रुप से तालबद्ध पैटर्न या एक विषेष वाद्य यंत्र संगीत को पारम्परिक एहसास देनें के लिए पर्याप्त है, चाहे इसे हाल ही में रचा गया हो। संगीत की छोटी सी धुन में बैगपाइप या तबले की पहचान करना आसीन है।

गैर व्यवसायिक :– सांस्कृतिक पहचान सामारोह का प्रर्दान कभी–कभी बिना किसी लाभ कें, बिना मकसद के किया जाता है। अतीत में आयोजक के लिए वित्तीय इनाम का न होना अत्यन्त सामान्य था।

राजस्थानी लोकसंगीत

राजस्थान राजपूतों की वीरभूमि है, जिन्होनें विदेषियों से देष की रक्षा का भार अपने कन्धों पर उठाया था। यह जाति मुसलमानों के आगमन के साथ ही प्रकाष में आई। इतिहास साक्षी है कि राजपूतों ने मुस्लिम शासकों को कभी चैन से राज्य नहीं करने दिया। मुगल उसी समय भारत में अपना राज्य स्थापित कर सके ,जब इन्होनें राजपूतों को अपना मित्र बना लिया। राजपूतों का अधिकांष समय युद्धों में व्यतीत होता था, परन्तु वह संस्कृति के रक्षक भी थें। शन्ति के समय में उन्होनें संगीत, साहित्य और कलाओं को संरक्षण प्रदान किया। अतः राजस्थान का संगीत अपनी अलग ही विषेषता रखता है। राजस्थान की भी अपनी संस्कृति है, अपना लोकसंगीत है। यह गीत अन्य प्रान्तों के गीतों की तरह जन जीवन के अत्यन्त निकट होते है।

राजस्थानी लोकसंगीत दो भागों में विभाजित है– प्रथम मरुभूमि के गीत, दूसरे पहाड़ी देशों के गीत, राजस्थानी लोकगीत यहाँ विपुल मात्रा में मिलते है। गृहस्थ, दाम्पत्य, कारुणय त्यौहार, ऐतिहासिक, सभी विषयों से सम्बन्ध रखने वाले गीत यहाँ उपलब्ध है और इन गीतों में स्वर माधुर्य मौलिकता तथा ह्ृदयस्पर्शिता होती है।

वर्गीकरण

राजस्थानी गीतों के प्रकार एवं प्रसिद्ध लोक गायन शैलियों का वर्गीकरण किया गया है जो निम्न हैः–

प्रसिद्ध लोकगीत

(1) सुवटिया :–उत्तरी मेवाड़ में भील जाति की स्त्रियां पति–वियोग में तोते (सुए) को संबोधित करते हुए यह गीत गाती है।

(2) पीपली गीतः– मारवाड़ बीकानेर तथा शेखावटी क्षेत्र में वर्षा ऋतु के समय स्त्रियों द्वारा गाया जाने वाला गीत है।

(3) कुरजां गीत :– यह लोकप्रिय गीत कुरजां पक्षी को संबोधित करते हुए विरहणियों द्वारा अपने प्रियतम की याद में गाया जाता है, जिसमें नायिका अपने परदेस स्थित पति के लिए कुरजां को सन्देश देने को कहती है।

(4) जकड़िया गीत :– पीरों की प्रशंसा में गाए जाने वाले गीत जकड़िया गीत कहलाते है।

(5) पपीहा गीत :– पपीहा पक्षी को सम्बोधित करते हुए गाया गया गीत है। जिसमें प्रेमिका अपने प्रेमी को उपवन में आकर मिलनें की प्रार्थना करती है।

(6) कांगसियों :– यह राजस्थान का एक लोकप्रिय श्रृंगारिक गीत है।

(7) हिचकी गीत :– मेवात क्षेत्र अथवा अलवर क्षेत्र का लोकप्रिय गीत दाम्पत्य प्रेम से परिपूर्ण जिसमें प्रियतम की याद को दर्शाया जाता है।

(8) कामण :– कामण का अर्थ है– जादू–टोना। पति को अन्य स्त्री को जादू–टोने से बचाने के लिए ग्रामीण क्षेत्रों में स्त्रियों द्वारा गाये जाने वाला गीत है।

(9) पावणा :– विवाह के पश्चात् दामाद के ससुराल जाने पर भोजन के समय अथवा भोजन के उपरान्त स्त्रियों द्वारा गाये जाने वाला गीत है।

(10) बिच्छूड़ो :– हाड़ोती क्षेत्र का लोकप्रिय गीत जिसमें एक स्त्री जिसे बिच्छु ने काट लिया है और वह मरने वाली है, वह पति को दूसरा विवाह करने का संदेश देती है।

(11) घूमर :– गणगौर अथवा तीज त्यौहारों के अवसर पर स्त्रियों द्वारा घूमर नृत्य के साथ गाया जाने वाला गीत है, जिसके माध्यम से नायिका अपने प्रियतम से श्रृंगारिक साधनों की मांग करती है।

(12) गोरबंध :– गोरबंध ऊंट के गले का आभूषण है। मारवाड़ तथा शेखावटी क्षेत्र में इस आभूषण पर गीत गाया जाता है।

(13) चिरमी :– चिरमी के पौधे को सम्बोधित कर बाल ग्राम वधू द्वारा अपने भाई व पिता की प्रतीक्षा के समय की मनोदशा का वर्णन है।

(14) मूमल :– जैसलमेर क्षेत्र का लोकप्रिय गीत, जिसमे लोद्रवा की राजकुमारी मूमल का सौंदर्य वर्णन किया गया है। यह एक श्रृंगारिक गीत है।

(15) ढोला–मारु :– सिरोही क्षेत्र का लोकप्रिय गीत जो ढोला–मारु के प्रेम–प्रसंग पर आधारित है, तथा इसे ढांढी गाते है।

(16) इंडूणी :– यह गीत पानी भरने जाते समय स्त्रियों द्वारा गाया जाता है। इसमें इंडूणी के खो जाने का जिक्र होता है।

(17) औल्यूं गीत :– ओल्यू का मतलब "याद आना" है। बेटी के विदाई के समय गाया जाने वाला गीत है।

(18) घुड़ला गीत :– मारवाड़ क्षेत्र का लोकप्रिय गीत है, जो स्त्रियो ं द्वारा घुड़ला पर्व पर गाया जाता है।

(19) जीरो :– जालौर क्षेत्र का लोकप्रिय गीत है। इस गीत में स्त्री अपने पति से जीरा ना बोने की विनती करती है।

(20) हिण्डोल्या गीत :– श्रावण मास में राजस्थानी स्त्रियां झुला–झुलते समय ये गीत गाती है। **6**

प्रसिद्ध लोक–गायन शैलियाँ

(1) माण्ड गायन शैली :–10वीं 11वीं शताब्दी में जैसलमेर क्षेत्र माण्ड क्षेत्र कहलाता था। अतः यहाँ विकसित गायन शैली माण्ड गायन शैली कहलाई। यह एक श्रृंगार गायन शैली है। इसकी प्रमुख गायिकाएं है–अल्ला–जिल्हा बाई (बीकानेर), गवरी देवी (पाली), मांगी बाई (उदयपुर), जमिला बानो (जोधपुर) तथा बन्नों बेगम (जयपुर) जो प्रसिद्ध नृतकी "गोहर जान" की पुत्री है।

(2)मांगणियार गायन शैली :– राजस्थान के पश्चिमी क्षेत्र विशेषकर जैसलमें तथा बाड़मेर की प्रमुख जाति मांगणियार जिसका मुख्य पेशा गायन तथा वादन है। मांगणियार जाति मूलतः सिन्ध प्रान्त की है तथा यह मुस्लिम जाति है। इनका प्रमुख वाद्य यंत्र कमायचा तथा खड़ताल है। इस गायन शैली में 6 राग व 36 रागनियों का प्रयोग होता है। इसके प्रमुख गायक **सदीक खाँ मांगणियार** (प्रसिद्ध खड़ताल वादक) तथा साकर खाँ (प्रसिद्ध कमायचा वादक) है।

(3) लंगा गायन शैली :– लंगा जाति का निवास स्थान जैसलमेर–बाड़मेर जिलों मे है। बड़वसणा गांव बाड़मेर "लंगो का गाांव" कहलाता है। यह जाति मुख्यतः राजपूतों के यहाँ वंशावलियों का बखान करती है। इनके प्रमुख वाद्य कमायचा तथा सारंगी है। प्रसिद्ध गायकार अलाउद्दीन खाँ लंगा तथा करीम खाँ लंगा है।

(4) तालबंधी गायन शैली :– औरंगजेब के समय विस्थापित किए गए कलाकारों के द्वारा राज्य के सवाईमाधोपुर जिले में विकसित शैली तालबंधी गायन शैली है। इस गायन शैली के अन्तर्गत प्राचीन कवियों की पदावलियों को हारमोनियम तथा तबला वाद्य यंत्रो के साथ संगत के रुप में गाया जाता है। वर्तमान में यह पूर्वी क्षेत्र में लोकप्रिय है।

(5) हवेली संगीत गायन शैली :– इसका प्रधान केन्द्र नाथद्वारा (राजसमंद) है। औरंगजेब के समय में बंद कमरों के अन्दर यह गायन शैली विकसित हुई।

उपसंहार :– राजस्थान में लोकगीतों का बहुत प्रचार है। यहाँ के जीवन में लोकसंगीत व्याप्त है। लोकनृत्यों में भी राजस्थान की माटी की सुगंध है, इसमें राजस्थानी जीवन की महक है। आज प्रचार–प्रसार के माध्यमों तथा चित्रपट संगीत के अभाव से लोकसंगीत का वह रुप नही रहा। आज लोकगीत भी फिल्मी धुनों में गाए जाने लगे है, फिर भी लोकसंगीत की सोंधी समाप्त नहीं हुई है।

सन्दर्भः

1. हिंदीसाहित्य का वृहद् इतिहास–षोडषभाग–हिन्दीकालोकसाहित्य सम्पादक–पं.राहुल सांस्कृत्यायन (पृ.1)
2. डा.कुलदीप (1972) प्रथमसंस्करण"लोकगीतोंकाविकासात्मक अध्ययन" पृ.16
3. महादेवीवर्मा–विवेचनात्मक गद्य. पृ. 141
4. डॉ. सत्येन्द्र–"बृजलोकसाहित्य का अध्ययन"पृ. 118
5. डॉ. श्याम परमार– भारतीय लोक साहित्य (पृ.64,65,66)
6. संगीत विशारद– वसंत